प्राचीन भारत में राजनैतिक चिंतन : राजतरंगिणी के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. भावना यादव
सहायक प्राध्यापक - राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म. प्र.)

प्राचीन भारतीय साहित्य वेद, पुराणों से प्रारंभ होकर रामायण, महाभारत, गीता जैसे अनेकों ग्रंथों में विस्तार लिये हुये है। जिनमें उस समय, काल और परिस्थितियों की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जानकारियाँ बिखरी हुई हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन विभिन्न विद्वानों ने अपनी आवश्यकता यथा इतिहास, संस्कृति साहित्य की जानकारी हेतु अपने-अपने दृष्टिकोणों से किया। प्राचीन भारतीय साहित्य की इसी शृंखला का एक भाग कल्हण की राजतरंगिणी के रूप में हमें उपलब्ध है। इस शोध पत्र में राजतरंगिणी में राजनैतिक जानकारियों यथा राज, राज्य, सत्ता शासन, देशों के आपसी संबंध आदि को खोजकर उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करना है।

"महाकवि कल्हण उस चम्पक महामंत्री के पुत्र थे जिसने सन् 1089 से 101 तक महाराज हर्षदेव का प्रधान मंत्रित्व किया था। बाल्यकाल से ही पिता के संपर्क में रहने के कारण कवि को राजा हर्षदेव के कार्यकलाप एवं उत्थान पतन की गाथा को निकट से अध्ययन करने का सुयोग सुलभ हो गया था। उन्होंने 4224 लौकिक वर्ष अर्थात् सन् 1148 में राजतरंगिणी की रचना आरंभ की और सन् 1150 में समाप्त किया।"[1]

इस प्रकार राजतरंगिणी की रचना आज से 866 वर्ष पूर्व कल्हण द्वारा की गई। यह एक काव्यात्मक ग्रंथ है जिसमें कल्हण ने इतिहास को निष्पक्ष रूप से समेटा है।

"विल्सन, बूलर और स्टीन आदि कतिपय पाश्चात्य इतिहास प्रेमी विद्वानों का कहना है कि "महाकवि कल्हण अपने इतिहास प्रणयन कार्य में पूर्ण सफल रहे। उन्होंने विभिन्न कश्मीर नरेशों के उत्थान पतन की गाथा को सन् तथा तिथि सहित समेटकर भारतीय इतिहास पर बहुत बड़ा उपकार किया है। ..... कल्हण स्वाभिमानी काव्यशिल्पी था। उसने यह ऐतिहासिक महाकाव्य किसी राजा से पुरस्कार प्राप्त करने के निमित्त नहीं लिखा था। अपितु ऐतिहासिक तथ्य विश्व के समक्ष रखने के उद्देश्य से ही उसने यह भगीरथ प्रयत्न किया और इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त की।"[2]

कल्हण की राजतरंगिणी एक काव्य ग्रंथ है जिसमें उसने इतिहास को अन्य ग्रंथों की सहायता से प्रमाणित करते हुये विस्तार से बताया है। साथ ही उसने प्रमाणिक ग्रंथों, देवालयों से प्राप्त शिलालेख, ताम्रपत्र तथा सनद, पुरातन, प्रशस्तियों, विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथों और पुराने सिक्कों से प्रमाणिक संदर्भ लिये हैं।

राजतरंगिणी की कथा युधिष्ठिर के राज्याभिषेक से प्रारंभ होती है। जिसके विषय में कल्हण ने लिखा है "मैंने प्राचीन विद्वानों द्वारा रचित राजकथा विषयक ग्यारह ग्रंथ पढ़े हैं और नीलमुनि द्वारा विरचित नीलमत-पुराण का भी अध्ययन किया है। प्राचीन राजाओं द्वारा निर्मित देवमंदिरों, नगरों, ताम्रपत्रों, आज्ञापत्रों,

प्रशस्तिपत्रों एवं अन्य शास्त्रों का मनन-मंथन करने के कारण मेरा सारा भ्रम दूर हो चुका है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाववश पुराने ग्रंथकारों को 52 राजाओं का इतिहास ज्ञात नहीं था। उनमें से गोनंद आदि चार राजाओं का इतिवृत्त मुझे नीलमत पुराण से ज्ञात हुआ।

आगे कल्हण ने कश्यप द्वारा निर्मित कश्मीर का वर्णन उसके प्राकृतिक सौंदर्य के साथ शासन और सत्ता अर्थात कश्मीर के शासकों का विस्तार से वर्णन करते हुये "रानी यशोमती, राजा लव उसके पुत्र करोशयाक्ष उसके पुत्र खगेन्द्र और राजा सुरेन्द्र का उल्लेख श्लोक 86, 88, 89, 91 में किया है।"[3]

श्लोक 284 में कल्हण ने कहा है कि "अपने स्वामी के साथ भला या बुरा बर्ताव करने वाले सेवक अपने को लोक तथा परलोक में वंदनीय अथवा निंदनीय बना सकते हैं। राजा गोपादित्य के शासन काल के विषय में श्लोक 338 में कल्हण ने कहा कि "उसके शासनकाल में शास्त्रानुसार वर्णाश्रम धर्म के सब कार्य होते थे। इसलिये प्रजा की दृष्टि में वह समय सत्ययुग सा प्रतीत हो रहा था।"[4]

वास्तव में कल्हण ने राजतरंगिणी के आठ भागों में 8000 श्लोकों की रचना की। जिनमें पहले तीन भागों में कश्मीर के प्राचीन इतिहास का वर्णन किया। चौथे से लेकर छठवें भाग में कार्कोट तथा उत्पल वंश के राजाओं के इतिहास का वर्णन है। अंतिम सातवें व आठवें भाग में लोहार वंश के शासन के इतिहास का उल्लेख है।

राजा के गुण-दोषों की चर्चा करते हुये श्लोक 355 में बताया "प्राणी मात्र में समदर्शिता योगियों का गुण है, किंतु यही गुण राजाओं के लिये अपकीर्ति का कारण बनकर महान दोष के रूप में परिणत हो जाता है। गुणों को दोष एवं दोषों को गुण बतलाने वाले धूर्तों के फेर में पड़कर वह राजा प्रतिभाहीन एवं स्त्रैण बन गया। वह राजा युधिष्ठिर प्रत्यक्ष में तो लोगों के गुण की प्रशंसा करता था, किन्तु परोक्ष में निंदा इस कारण उसके सब सेवक भी उससे द्वेष करने लगे थे। इस प्रकार उसके पतनोन्मुख तथा अवधान होने के कारण उसकी राज्यस्थिति शीघ्र ही लड़खड़ा गयी।"[5]

राजा के प्रजा के प्रति व्यवहार को राजा जलौक के जीवन वृतांत में व्यक्त किया गया है जहाँ अकाल पीढ़ित प्रजा के दुःख से दुखित राजा रानी से कहता है "वे राजे धन्य हैं, जो पुत्रों की भाँति प्रिय अपनी प्रजा को सुखी देखकर रात को सुख की नींद सोते हैं। ..... यदि बड़े लोग दुःखियों के दुःख न दूर कर सकें तो उन बड़ों का वड़प्पन ही क्या रहा? सत्यप्रतिज्ञ राजाओं की आज्ञा का उल्लंघन करने का सामर्थ्य इंद्र, ब्रह्मा और बेचारे यम में भी नहीं है। पति भक्ति स्त्रियों का व्रत है, निर्वर भाव से प्रजा के व्यवहारों को चलाना मंत्रियों का व्रत है और अन्य सभी काम छोड़कर प्रेम पूर्वक प्रजा का पालन करना राजा का व्रत होता है।"[6]

राजा जयेन्द्र का उल्लेख करते हुये कल्हण ने श्लोक 66 में लिखा है कि राजा तथा हाथियों के चंचल कानों को स्थिर कर देने का संसार भर में कोई उपाय नहीं निश्चित हो सका।..... विचारवान राजे सहसा किसी की बात पर विश्वास नहीं करते। हाँ गंभीर विचार करने के बाद भले ही उसकी बात पर विश्वास कर लें, किन्तु प्रतिध्वनिमात्र करने तथा पर्वत के स्वभाववाले राजे किसी की भी बात पर तुरंत विश्वास कर लेते हैं।"[7]

राजा की राज्य प्राप्ति के विषय में तृतीय स्तरंगण के 244वें श्लोक में लिखा गया है कि "जैसे अपने पूर्वजन्म के कर्मानुसार जन्म लेने वाले प्राणी के माता-पिता जन्मदान के निमित्त मात्रा होते हैं, उसी प्रकार अपने

पुण्यबल से राज्य प्राप्त करने वाले राजा के लिये अन्य लोग प्रवर्तक मात्र हुआ करते हैं। ऐसी स्थिति में, मैं आप लोगों का सेवक हूँ।"[8]

"दुःख सहने में असमर्थ शत्रु को पीस देने में कौन बड़ी वीरता है। जो आक्रामक को उखाड़ फेंकने की सामर्थ्य रखते हों उन्हें पराजित करने में ही सच्ची वीरता होती है। चन्द्रोदय से कमल द्वेष करते हैं, किंतु चन्द्रमा उन कमलों का नाश नहीं करता। बल्कि वह तो उन कमलों के विनाशकारी हाथियों के दाँत तोड़ने में ही औचित्य समझता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ों के कोप का पात्र बड़ा ही होता है।"[9]

राजतरंगिणी के आठ अध्यायों में कश्मीर के शासकों की क्रमबद्ध शृंखला और उनके द्वारा किये गये निर्माण कार्यों यथा मंदिर, तालाब, सड़क, नहर, भवन आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। साथ ही विभिन्न राजाओं के स्वभाव, व्यवहार, कार्यों का वर्णन उनका प्रजा के साथ व्यवहार और अन्य राज्यों से संबंध संधि, युद्धों, पराजयों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

कल्हण ने पृथक रूप से कहीं भी राजा सत्ता शासन का उल्लेख नहीं किया वरन् उनके द्वारा वर्णित विभिन्न कालखण्डों में कश्मीर के शासकों के वृत्तांत से उस समय की राजनैतिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। जिससे हम उस समय के राजनैतिक चिंतन के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कल्हण के राजाओं के गुण एवं दोषों का विस्तार से वर्णन किया है। जिसमें तत्कालीन राजनीति के साथ सदाचार और नैतिक शिक्षा के साथ समाज के विभिन्न पहलुओं के इतिहास का वर्णन किया है।

सन्दर्भ

1. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी प्रथम स्तरंगण, पृ. 3
2. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी प्रथम स्तरंगण, पृ. 3-4
3. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी प्रथम स्तरंगण, पृ. 7
4. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी प्रथम स्तरंगण, पृ. 23
5. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी प्रथम स्तरंगण, पृ. 24
6. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी द्वितीय स्तरंगण, पृ. 28-29, श्लोक 42, 46, 47, 48
7. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी द्वितीय स्तरंगण, पृ. 30, श्लोक 70
8. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी द्वितीय स्तरंगण, पृ. 55
9. श्री कल्हण महाकविविरचिता - राजतरंगिणी द्वितीय स्तरंगण, पृ. 58, श्लोक 283, 284